History inspires generations: Governor

IGNCA holds seminar, exhibition, lecture on Amrit Mahotsav

PNS ■ Ranchi

Governor Ramesh Bais addresses a seminar on 'Antiquity of the Mundari Literature and its Relevance' at Aryabhatta Hall in Ranchi on Wednesday. PNS

The Indira Gandhi National Centre for the Arts, Regional Centre, Ranchi and Dr Shyama Prasad Mukherjee University Ranchi as part of Amrit Mahotsav on Wednesday organized a seminar titled 'Antiquity of the Mundari Literature and its Relevance'. The two day seminar was inaugurated by Governor Ramesh Bais and the guest of honour was university Vice-Chancellor Dr Nitin Madan Kulkarni.

Addressing the seminar, chief guest Governor Bais said that he is happy and glad to participate at the Azadi Ka Amrit Mahotsav event. The Governor after inaugurating the exhibition said that history encourages generations to take inspiration from the past. However, in history some distortion has been done thus hiding the relevant facts from people. Thus historical distortion has come to fore when researchers carried out research finding out the difference between the facts which they have read in books and reality.

In this programme, a special lecture was also presented by Dr. Anand Vardhan, Secretary of the Association of Indian Museums, on the topic of the People's War against British Colonialism - A Historical Review (up to the Great Revolution of 1757-1857).

Addressing the gathering, Anand Vardhan said that the history of freedom movement of any nation in the history of the world is not as much as that of India. The main attraction of the program was an exhibition called Freedom Ki Ranbhari, in which information about 75 incidents of freedom movements before 1857 was given. Some of these incidents have become a mystery for today's generation. The exhibition will run till May 10.

During this program, Dr. Kumar Sanjay Jha, Director, Indira Gandhi National Center for the Arts, Ranchi introduced the guests and the stage was conducted by Kamal Kumar Bose. The vote of thanks was presented by the Registrar of the University, Dr. Namita Singh. Hundreds of students, including heads of departments, employees of various departments of the university were present during the program.

देश के इतिहास को उलटफेर कर प्रस्तुत किया गया : राज्यपाल

रांची, प्रमुख संवाददाता। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र व डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, रांची की ओर से आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत बुधवार को प्रदर्शनी आजादी की रणभेरी की शुरुआत हुई, जो 10 मई तक चलेगी। साथ ही एक विशेष व्याख्यान-ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरुद्ध जनयुद्ध : एक ऐतिहासिक पुनर्वलोकन (1757 से 1857 की महाक्रांति के पूर्व तक) का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि राज्यपाल रमेश बैस मौजूद थे। मुख्य वक्ता थे भारतीय संग्रहालय संघ के सचिव डॉ आनंदवर्द्धन। अध्यक्षता कुलपति डॉ नितिन मदन कुलकर्णी ने की।

डीएसपीएमयू सभागार में बुधवार को आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते राज्यपाल रमेश बैस। मौके पर उपस्थित विद्यार्थी व अतिथिगण।

प्रदर्शनी लगाई गई

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण आजादी की रणभेरी प्रदर्शनी है, जिसमें 1857 के सिपाही विद्रोह से पूर्व की 75 घटनाओं व जनांदोलनों की जानकारी दी गई है। इनमें से कुछ घटनाएं तो आज की पीढ़ी के लिए रहस्य बन चुकी हैं। जिनमें-सिराजुद्दौला का संघर्ष, बंगाल सेना आंदोलन, अफीम किसान आंदोलन, बुनकर आंदोलन, रंपा आंदोलन, नमक कारीगर आंदोलन, चेरो आंदोलन आदि शामिल है। यह प्रदर्शनी 10 मई तक चलेगी।

राज्यपाल ने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव के तहत इस प्रकार के आयोजन से मन को प्रसन्नता होती है। उन्होंने कहा कि इतिहास अतीत में घटित घटनाओं को बताता है, ताकि लोग उससे प्रेरणा ले सकें, लेकिन हमारे इतिहास को पहले अंग्रेजों और कुछ देश के ही लोगों ने उलटफेर कर प्रस्तुत किया। इस तरह आम जनता से वास्तविकता को छुपाया गया। लेकिन, जब शोधकर्ता शोध करते हैं तो वे पाठ्य पुस्तकों में पढ़ाए गए तथ्य और वास्तविकता में जमीन आसमान का फर्क पाते हैं। राज्यपाल ने कहा कि इतिहास में अकबर की प्रशंसा तो की गई है, लेकिन उसके खिलाफ संघर्ष करनेवाले राणा प्रताप का सही मूल्यांकन नहीं किया गया। कहा कि आजादी का अमृत महोत्सव यह अवसर देता है कि हम अपने गौरवपूर्ण अतीत को जानें।

मुख्य वक्ता भारतीय संग्रहालय संघ के सचिव डॉ आनंद वर्धन ने कहा कि विश्व के इतिहास में किसी भी राष्ट्र के स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास भारत के जितना गौरवशाली नहीं है। मौके पर डॉ कुमार संजय झा, डॉ अनिस कुमार, डॉ नमिता सिंह समेत अन्य मौजूद थे।

सेमिनार : मुंडारी भाषा पर शोध पत्र प्रस्तुत किए गए

सेमिनार के समापन पर अपने विचार रखते अतिथि।

रांची, वरीय संवाददाता। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र रांची और डीएसपीएमयू के मुंडारी भाषा विभाग की ओर से मुंडारी भाषा की प्राचीनता एवं प्रासंगिकता विषय पर आयोजित सेमिनार का समापन गुरुवार को हुआ। आखिरी दिन मुंडारी भाषा से संबंधित अनेक शोध पत्र प्रस्तुत किए गए।

प्रथम सत्र 10.30 शुरू हुआ, जिसकी अध्यक्षता डीएसपीएमयू के पूर्व कुलपति डॉ सत्यनारायण मुंडा ने की। उन्होंने मुंडारी साहित्य, भाषा तथा संस्कृति की महानता पर विस्तार से चर्चा किया। प्रथम सत्र में सोमा सिंह मुंडा, डॉ विरेंद्र कुमार सोय, डॉ विक्रम जोय ने अपने-अपने पत्र प्रस्तुत किए।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ रामदयाल सिंह मुंडा जनजातीय शोध संस्थान के पूर्व उप निदेशक सोम सिंह मुंडा ने की। मुख्य वक्ता के रूप में बीरबल सिंह मुंडा, गुंजल इकिर मुंडा और तनूजा मुंडा ने अपने विचार साझा किए।

भाषा का इतिहास, भाषा परिवार, भाषा एवं साहित्य की वर्तमान स्थिति, मुंडारी लोक साहित्य का परिचय एवं उसकी प्रासंगिकता, मुंडारी लोकगीत, मुंडारी लोक कथा, मुंडारी लोकनाट्य, मुंडारी लोकनृत्य, मुंडारी खेलगीत, बालगीत, हमुंडारी कहावत, लोकोक्ति, मुहावरा, पहेली, मंत्र आदि विषय पर शोध पत्र प्रस्तुति किए गए।

डीएसपीएमयू : मुंडारी भाषा की उत्पत्ति इतिहास व वर्तमान को उन्नत बनाना होगा

रांची. आजादी के अमृत महोत्सव के आयोजनों की श्रृंखला में डीएसपीएमयू में मुंडारी भाषा विभाग, और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के तत्वावधान में मुंडारी भाषा की प्राचीनता एवं प्रासंगिकता पर दो सत्रों में सेमिनार का आयोजन गुरुवार को किया गया. प्रथम सत्र में इस विषय पर विशेषज्ञों ने अपने विचार व्यक्त किये. पूर्व कुलपति डॉ सत्यनारायण मुंडा ने पहले सत्र की अध्यक्षता करते हुए मुंडारी भाषा की उत्पत्ति, इतिहास और वर्तमान स्थिति को और अधिक उन्नत बनाये रखने की दिशा पर बल दिया. दूसरे सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ रामदयाल मुंडा जनजातीय शोध संस्थान के पूर्व उप निदेशक सोमा मुंडा ने मुंडारी भाषा की समग्रता को और अधिक व्यापक बनाने की बात कही. दोनों सत्रों में 20 शोध पत्र प्रस्तुत किये गये. ये शोध पत्र मुंडारी लोक गीत, मुंडारी लोक कथा, मुंडारी लोक नाट्य से संबंधित थे. इनके अलावा बीरबल सिंह मुंडा और गुंजल मुंडा ने भी अपनी बातें रखीं.

prabhatkhabar.com
प्रभात खबर
लाइफ @ रांची
जर्नलिज्म जिंदगी का
रांची, शुक्रवार 06.05.2022

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र का प्रयास 'आजादी की रणभेरी'

मिलिए गुमनाम क्रांतिकारियों से

1756 से लेकर 1855 तक हुए कुल 75 आंदोलनों और उनके नायकों की कहानियों का संग्रह है यह प्रदर्शनी

'आजादी के अमृत महोत्सव' के तहत देश भर में लगायी जा रही प्रदर्शनी, अब तक हो चुके हैं 25 कार्यक्रम

पूरी प्रदर्शनी को सार के रूप में जल्द ही दिया जायेगा किताब का रूप, इतिहास के विद्यार्थियों को होगा लाभ

अब तक गुमनाम हर नायक पर 10 से 15 मिनट की डॉक्यूमेंट्री भी तैयार कर रहा इंदिरा गांधी कला केंद्र

इतिहास में लिखित तौर पर 1857 के सैनिक विद्रोह को ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ पहले स्वतंत्रता संग्राम के रूप में दर्ज किया गया है. जबकि, इससे पहले भी अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ अनेकों विद्रोह हुए थे. हालांकि, ऐसी ज्यादातर घटनाएं न प्रचलित हो पायीं और न ही किसी पाठ्यक्रम का हिस्सा बन पायीं. 'इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र' ऐसी ही घटनाओं को दस्तावेज और चलचित्रों का रूप देकर सबके सामने का प्रयास कर रहा है. कला केंद्र की ओर से राजधानी स्थित डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विवि (डीएसपीएमयू) परिसर में 'आजादी की रणभेरी' शीर्षक से प्रदर्शनी लगायी गयी है, जिसमें 1756 से लेकर 1855 तक हुई कुल 75 में लगभग 25 विद्रोही घटनाओं को चित्रित किया गया है. खास बात यह है कि बड़ी संख्या में विद्यार्थी इस प्रदर्शनी को उत्सुकता के साथ देखने पहुंच रहे हैं. प्रस्तुत है लाइफ@रांची की यह रिपोर्ट...

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र ने 1756 से लेकर 1855 तक अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ हुए कुल 75 आंदोलनों और उनके नायकों की [illegible]

झारखंड के गुमनाम हीरोज पर बनेगी डॉक्यूमेंट्री

[illegible]

राज्य के अन्य विश्वविद्यालयों में लगेगी प्रदर्शनी

[illegible]

[illegible] -[illegible]

[illegible] -[illegible] कुमार

[illegible] -अभिषेक कुमार

[illegible] -शुभम कुमार

प्रमुख आंदोलन, जो प्रदर्शनी में दिखाये गये हैं

[illegible]	(1769-70)	[illegible]	(1824-1826)
[illegible]	(1770-1800)	[illegible]	(1824-1826)
[illegible]	(1770-1800)	[illegible]	(1828-1833)
[illegible]	(1771-1800)	[illegible]	(1829-1830)
[illegible]	(1776-1814)	[illegible]	(1829-1838)
[illegible]	(1776-1787)	[illegible]	(1830-1833)
[illegible]	(1795)	[illegible]	(1833)
[illegible]	(1824-1826)	[illegible]	(1839)

झारखंड से जुड़े कुछ आंदोलन और उनके नायक

पहाड़िया आदिवासी आंदोलन (1788-90)

[illegible]

संताल आंदोलन (1855-1856)

[illegible]

हो आदिवासियों का संघर्ष (1820-21)

[illegible]

चेरो आंदोलन (1770-71)

[illegible]

जंगल महाल स्वतंत्रता आंदोलन (1769-1805)

[illegible]

कोल आंदोलन (1831-1833)

[illegible]

05 मई 2022

आजाद सिपाही
186400 Subscribers
YouTube Channel
झारखंड में सबसे ज्यादा दे
VIEWERSHIP 3 Crore 80 lakh+
Watch 11
Subscribe NOW

स्मार्ट सिटी

दो दिवसीय संगोष्ठी और प्रदर्शनी का उद्घाटन

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से लेनी चाहिए प्रेरणा : राज्यपाल

आजादी का अमृत महोत्सव का अर्थ नये विचारों का अमृत है

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड के राज्यपाल रमेश बैस ने कहा कि अतीत की घटनाओं से अवगत होकर स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों से सबको प्रेरणा लेना चाहिए। इतिहास में वास्तविकता आनी चाहिए, शोधकर्ता अपने शोध में इस दिशा में ध्यान दें। वे बुधवार को डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी तथा प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि आजादी का अमृत महोत्सव का अर्थ नये विचारों का अमृत है। इसका उद्देश्य देशभर में एक अभियान चलाकर देश की आजादी के लिए स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों द्वारा दिये गये बलिदान एवं उनके योगदान से सबको अवगत कराना है। देशभक्ति की भावना जागृत करने के साथ गुमनाम शहीदों की गाथाएं जन-जन तक पहुंचाना है।

उन्होंने कहा कि उनका मानना है कि जब हम देशवासी पूरी तरह जान जायेंगे कि हमें स्वाधीनता कितनी कठिनाई से मिली, इसके लिए हमारे स्वतंत्रता सेनानियों को कितना संघर्ष करना पड़ा, कितनी यातनाएं झेलनी पड़ी तो हर देशवासी में राष्ट्रभक्ति की भावना स्वतः ही जागृत हो जायेगी। वे मातृभूमि से प्रेम की अहमियत को समझ पायेंगे।

उन्होंने कहा कि आजादी का अमृत महोत्सव हमें यह भी अवसर देता है कि हम अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपने इतिहास को और भी गहराई से जानें। इससे सबको पता लगेगा कि भारत माता ने कैसे-कैसे वीरों को जन्म दिया है। स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए बहुत सारे देशवासी शहीद भी हुए, जिनमें कुछ लोग ऐसे थे जिनकी उम्र बहुत कम थी लेकिन अपने वतन को लेकर इतना प्रेम था और देश प्रेम की भावना इतनी प्रबल थी कि बिना किसी भय के ब्रिटिश हुकूमत को कड़ी चुनौती दी और उनका डटकर सामना अपनी आखिरी सांस तक किया।

Scanned by Scanner Go

दैनिक भास्कर 5 मई 2022

आजादी की रणभेरी प्रदर्शनी • 1757 से 1857 तक के 75 विद्रोह

स्वतंत्रता सेनानियों के गांव जाकर रिसर्च करें युवा स्कॉलर : गवर्नर

एजुकेशन रिपोर्टर | रांची

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी यूनिवर्सिटी (डीएसपीएमयू) में आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर तीन दिवसीय एग्जिबिशन, सेमिनार और व्याख्यान बुधवार से शुरू हो गया। एग्जिबिशन का विषय आजादी की रणभेरी है, जिसमें 1757 से 1857 तक के विभिन्न विद्रोहों की 75 घटनाओं और उनके नायकों के बारे में चित्रण किया गया है। बतौर मुख्य अतिथि राज्यपाल सह कुलाधिपति ने एग्जिबिशन को सराहा। कहा कि स्वतंत्रता सेनानियों के गांवों में जाकर रिसर्च के लिए युवा स्कॉलरों को आगे आना होगा। इसके बेहतर परिणाम सामने आएंगे। भविष्य में इन जानकारियों के आधार पर सरकार द्वारा ऐसे गांवों को आदर्श ग्राम के रूप में विकसित किया जा सकेगा। इससे पहले वीसी नितिन मदन कुलकर्णी ने तीन दिवसीय कार्यक्रम पर विस्तार से प्रकाश डाला। रजिस्ट्रार डॉ. नमिता सिंह ने धन्यवाद देते हुए कहा कि इस तरह कार्यक्रम भविष्य में भी आयोजित किए जाएंगे। संचालन डॉ. कमल बोस ने किया। बताते चलें कि डीएसपीएमयू और इंदिरा गांधी कला केंद्र ने संयुक्त रूप से इसे आयोजित किया। कला केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. कुमार संजय झा, एचओडी प्रो. विनोद कुमार ने भी विचार रखे।

पहाड़िया आंदोलन के बारे में बताया : मुख्य वक्ता आंबेडकर विवि के डॉ. आनंद वर्धन ने 1766 के पहाड़िया आंदोलन से 1855 संथाल हूल तक के इतिहास पर प्रकाश डाला। कहा-जनजातीय आंदोलन केवल कुल्हाड़ी, तीर- धनुष का युद्ध नहीं, बल्कि जन युद्ध था।

Scanned by Scanner Go

दैनिक जागरण – 5 मई 2022

आजादी के महानायकों के गांव गोद लें विवि : राज्यपाल

जासं, रांची : डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र रांची के संयुक्त प्रयास से आजादी के अमृत महोत्सव को ले तीन दिवसीय व्याख्यान, प्रदर्शनी और संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उद्घाटन राज्यपाल रमेश बैस ने किया। उन्होंने झारखंड के सभी जनजातीय आंदोलनों के कालक्रमों के बारे उल्लेख करते हुए अमृत महोत्सव को जन आंदोलन का रूप देकर युवा पीढ़ी में देश प्रेम की भावना संचारित करने की बात कही। सभी विश्वविद्यालयों को यह सलाह दी कि विद्यार्थियों को स्वतंत्रता सेनानियों के ग्रामों का अवलोकन करने और इतिहास ढूंढने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। ताकि इन जानकारियों का उपयोग कर सरकार इन्हें आदर्श ग्राम के रूप में विकसित कर सके। उन्होंने कहा कि हमारे विवि यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के तहत आजादी के इन महानायकों के ग्रामों को गोद भी ले सकते हैं। सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं को सफल बनाने के साथ-साथ वहां के बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। विद्यार्थी उन ग्रामों का भी अवलोकन करें ताकि इन महान विभूतियों के ग्रामों को आदर्श ग्राम के साथ पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा सके। इस कार्य में विवि अहम भूमिका का निर्वहन कर सकता है।

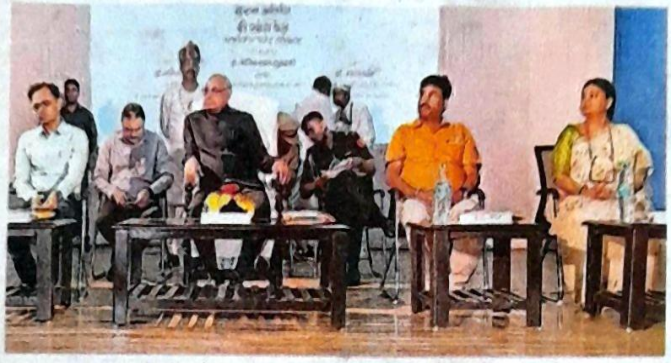

डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विवि में आयोजित कार्यक्रम में शामिल राज्यपाल व अन्य • जागरण

1757 से 1857 तक के विभिन्न विद्रोहों की 75 घटनाओं के जाने-अनजाने नायकों को किया याद

डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी विवि में आजादी के अमृत महोत्सव के तहत संगोष्ठी का राज्यपाल ने किया उद्घाटन

संगोष्ठी का लाभ लें विद्यार्थी : विवि टीआरएल विभाग के विद्यार्थियों द्वारा स्वागत में मुंडारी गीत की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए विवि के कुलपति डा नितिन मदन कुलकर्णी ने कार्यक्रम के दो घटकों का जिक्र किया। पहला संगोष्ठी, जिसमें मुंडारी भाषा की प्राचीनता एवं प्रासंगिकता है और दूसरे घटक की चर्चा के रूप में उन्होंने सचित्र प्रदर्शनी के बारे में बताया। जिसमें आजादी की रणभेरी...के तहत 1757 से 1857 तक के विभिन्न विद्रोहों की 75 घटनाओं के जाने-अनजाने नायकों को चित्र के माध्यम से याद किया गया।

इन्होंने भी प्रकट किए विचार : विवि की कुलसचिव डा नमिता सिंह और डा कमल बोस ने भी मौके पर अपने विचार प्रकट किए। वहीं कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के सभी शिक्षक, शिक्षकेत्तर कर्मी और विद्यार्थी मौजूद रहे।

मुंडारी भाषा की उत्पति, लिपि एवं संरचना की दी गई जानकारी

डा आंबेडकर विवि के वरीय प्राध्यापक आनंद वर्द्धन ने 1766 के पहाड़िया आंदोलन से 1855 संथाल हूल तक के इतिहास की जानकारी देते हुए झारखंड की समृद्ध व ऐतिहासिक इतिहास से लोगों को रूबरू कराया। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डा कुमार संजय झा के द्वारा मुंडारी भाषा की उत्पति, लिपि एवं संरचना के विकास एवं स्वदेशी संस्कृति के महत्व के बारे जानकारी दी। उन्होंने कहा कि झारखंड की क्षेत्रीय भाषा बेहद समृद्ध और सुसंस्कृत है। इसके विकास और शोध के लिए हर मुमकिन कवायद की जरूरत है। वहीं विवि के खोरठा भाषा के जनजातीय विभाग के विभागाध्यक्ष विनोद कुमार ने मुंडारी भाषा के अध्ययन, अध्यापन, शोध एवं प्रलेखन पर जोर दिया।

Scanned by Scanner Go

आजादी का अमृत महोत्सव. डीएसपीएमयू में 'मुंडारी भाषा की प्राचीनता व प्रासंगिकता' विषयक संगोष्ठी

अतीत की घटनाओं से प्रेरणा लेने के लिए प्रोत्साहित करता है इतिहास : राज्यपाल

लाइफ रिपोर्टर @रांची

झारखंड की जनजातीय व क्षेत्रीय भाषाओं के लोक साहित्य में दिखता है मातृभूमि के प्रति प्रेम का भाव

इतिहास हमें अतीत की घटनाओं से प्रेरणा लेने के लिए प्रोत्साहित करता है, पर कुछ लोगों द्वारा हमारे इतिहास में उलटफेर कर आम जनता से वास्तविकता छुपायी गयी है. स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा स्वाधीनता के लिए किये गये त्याग व बलिदान की गाथा हमें सदैव देश के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा देते हैं. जब हम देशवासी पूरी तरह जान जायेंगे कि हमें कितनी कठिनाई से स्वाधीनता मिली है, तो हर देशवासी में राष्ट्रभक्ति की भावना स्वतः ही जागृत हो जायेगी. उक्त बातें राज्यपाल रमेश बैस ने कही. वे बुधवार को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र और डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विवि के संयुक्त तत्वावधान में विवि परिसर में आयोजित 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तहत 'मुंडारी भाषा की प्राचीनता व प्रासंगिकता' विषयक संगोष्ठी को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे.

राज्यपाल ने कहा कि इस क्षेत्र में 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से पूर्व ही अंग्रेजों के विरुद्ध कई आंदोलन हुए. झारखंड की जनजातीय व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के लोक साहित्य में मातृभूमि के प्रति प्रेम के भाव दिखते हैं. इस क्षेत्र के लोगों के संघर्ष का इतिहास यहां के लोक गीतों के माध्यम से समझा जा सकता है. इसी कड़ी में मुंडारी साहित्य में ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध संघर्ष की गाथाएं निहित हैं. जिस दौर में संचार का कोई माध्यम नहीं था, तब यहां के लोगों ने अपनी परंपरा को स्वतंत्रता आंदोलन का हथियार बनाया. अपने लोक वाद्य यंत्रों को संचार का सशक्त माध्यम बनाया. राज्यपाल ने कहा कि आजादी का अमृत महोत्सव को जन-आंदोलन का रूप देना है, ताकि युवा पीढ़ी आजादी के संघर्ष की गाथा को समझ सके और उनके हृदय में देश-प्रेम की भावना का प्रबल संचार हो.

छात्रों को स्वतंत्रता सेनानियों के गांव भेजें

राज्यपाल श्री बैस ने कहा कि विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों को इंटर्नशिप के लिए स्वतंत्रता सेनानियों के ग्राम भेजे, ताकि उनकी कृतियों के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त कर सकें. उन गांवों का भी बेहतर तौर से अवलोकन करें, ताकि इन महान विभूतियों के गांवों को आदर्श ग्राम के साथ पर्यटन स्थल के रूप में भी विकसित किया जा सके. हमारे विश्वविद्यालय 'यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी' के तहत आजादी के इन महानायकों के गांवों को गोद ले सकते हैं. साथ ही सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं को सफल बनाने के साथ-साथ वहां के बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं.

किसी राष्ट्र के स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास भारत जैसा नहीं

भारतीय संग्रहालय संघ के सचिव डॉ आनंद वर्द्धन ने 'ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरुद्ध जनयुद्ध : एक ऐतिहासिक पुनरावलोकन (1757-1857 की महाक्रांति तक)' विषय पर एक व्याख्यान दिया. उन्होंने कहा कि विश्व के इतिहास में किसी भी राष्ट्र के स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास भारत के जितना नहीं है. कार्यक्रम में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, रांची के निदेशक डॉ कुमार संजय झा, कुलसचिव डॉ नमिता सिंह, विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष और विद्यार्थी मौजूद थे. मंच का संचालन प्रो कमल कुमार बोस ने किया.

डीएसपीएमयू में 'आजादी की रणभेरी' प्रदर्शनी लगी

आजादी का अमृत महोत्सव के तहत डीएसपीएमयू में 'आजादी की रणभेरी' शीर्षक से प्रदर्शनी लगायी गयी. इसमें 1857 से पहले हुई 75 घटनाओं को चित्रित किया गया है, जो ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ थी और जिन्होंने अंग्रेजी हुकूमत से भारत को आजादी दिलाने में अहम भूमिका निभायी. इनमें कई घटनाएं न प्रचलित हुई है और न ही किसी पाठ्यक्रम का हिस्सा है. इन प्रदर्शनियों द्वारा उन्हें जानने और समझने का मौका मिलेगा. वीर नायकों के बारे में भी बताया गया है. प्रदर्शनी में कई पोस्टर के माध्यम से महाराजा रणजीत सिंह का आंदोलन, संन्यासी आंदोलन, बुनकर आंदोलन, रेशम कारीगर आंदोलन, पहाड़िया आंदोलन, सुबादिया आंदोलन, सिपाही आंदोलन, पांयस्सी राजा की बगावत, सिलहट में अशांति जैसे कई आंदोलनों की विस्तृत जानकारी है. जबकि 1806-1815 के बीच दक्षिण का सिपाही आंदोलन, बगड़ी नायकों का आंदोलन, त्रावनकोर का संग्राम, बुंदेलखंड का संग्राम, बघेलखंड का संग्राम, बनारस का हड़ताल सहित 1816-1825 के बीच भी कई आंदोलन का वर्णन किया गया. वहीं, ही आदिवासियों का संघर्ष 1820-21, कोल आंदोलन 1831-1833, संथाल आंदोलन 1855-56 जैसे कई आंदोलन के बारे में विस्तार से जानकारी दी गयी है.

Scanned by Scanner Go

आज राजधानी

5 मई 2022.

विद्यार्थियों को स्वतंत्रता सेनानियों के ग्रामों का अवलोकन करने के लिए प्रोत्साहित करें : रमेश बैस

डीएसपीएमयू में संगोष्ठी का आयोजन

रांची। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, रांची एवं डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्व. विद्यालय, रांची के संयुक्त तत्वावधान में आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत मुंडारी भाषा की प्राचीनता एवं प्रासंगिकता नामक एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसके मुख्य अतिथि के रूप में झारखंड राज्य के राज्यपाल रमेश बैस और विशिष्ट अतिथि के तौर पर विश्वविद्यालय के कुलपति डा. नीतिन मदन कुलकर्णी मौजूद रहे। इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि राज्यपाल रमेश बैस ने कहा कि आजादी के इस अमृत के तहत इस प्रकार के आयोजन से मन को प्रसन्नता होती है। उन्होंने अमृत महोत्सव को जन आंदोलन का रूप देकर युवा पीढ़ी में देश प्रेम की भावना संचारित करने की बात कही तथा प्रत्येक विश्वविद्यालयों को यह सलाह दी कि विद्यार्थियों को स्वतंत्रता सेनानियों के ग्रामों का अवलोकन करने और इतिहास ढूंढने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। ताकि इन जानकारियों का उपयोग कर सरकार इन्हें आदर्श ग्राम के रूप में विकसित कर सके। उन्होंने इस संगोष्ठी को विद्यार्थियों के लिये अत्यंत उपयोगी और सार्थक बताया। उन्होंने प्रदर्शनी की प्रशंसा करते हुए कहा कि इतिहास एक ऐसी चीज है, जो हमारे अतीत घटी हुई घटनाओं से प्रेरणा लेने को प्रोत्साहित करती है। किंतु हमारे इतिहास को कुछ लोगों के द्वारा उलटफेर कर प्रस्तुत करके आम जनता से वास्तविकता को छुपाया गया। लेकिन जब शोधकर्ता शोध करते हैं और इतिहास में जाते हैं, तो उनके द्वारा पाठ्य पुस्तकों में पढ़ा गए तथ्य और वास्तविकता में जमीन आसमान का फर्क पाते हैं। इस कार्यक्रम में भारतीय संग्रहालय संघ के सचिव डा. आनंद वर्धन के द्वारा ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरुद्ध जनयुद्ध - एक ऐतिहासिक पुनरावलोकन (1757-1857 की महाक्रांति तक) विषय पर एक विशेष व्याख्यान भी पेश किया गया। इस व्याख्यान को संबोधित करते हुए डा. आनंद वर्धन ने कहा कि विश्व के इतिहास में किसी भी राष्ट्र के स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास भारत के जितना नहीं है। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण आजादी की रणभेरी नामक प्रदर्शनी रही, जिसमें सन 1857 से पूर्व की 75 घटनाओं जनांदोलनों की जानकारी दी गई है। इनमे से कुछ घटनाएं तो आज की पीढ़ी के लिए रहस्य बन चुकी हैं। ये प्रदर्शनी 10 मई तक चलेगी। इस कार्यक्रम के दौरान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, रांची के निदेशक डा. कुमार संजय झा ने अतिथियों का परिचय कराया एवं मंच का संचालन कमल कुमार बोस के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में आए हुए लोगों का धन्यवाद ज्ञापन विश्व. विद्यालय की कुलसचिव डा. नमिता सिंह के द्वारा किया गया। कार्यक्रम के दौरान विश्व. विद्यालय के विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, कर्मचारियों सहित सैकड़ों छात्र-छात्राएं मौजूद रहें।

सभी छाया : राजकुमार

Scanned by Scanner Go

राँची एक्सप्रेस, 5 मई 2022.

एक्सप्रेस
ई, 2022

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से लेनी चाहिए प्रेरणा : राज्यपाल

रांएसं

रांची : झारखंड के राज्यपाल रमेश बैस ने कहा कि अतीत की घटनाओं से अवगत होकर स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों से सबको प्रेरणा लेना चाहिए। इतिहास में वास्तविकता आनी चाहिए, शोधकर्ता अपने शोध में इस दिशा में ध्यान दें। वे बुधवार को डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी तथा प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि आजादी का अमृत महोत्सव का अर्थ नए विचारों का अमृत है। इसका उद्देश्य देशभर में एक अभियान चलाकर देश की आजादी के

लिए स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों द्वारा दिये गये बलिदान एवं उनके योगदान से सबको अवगत कराना है। देशभक्ति की भावना जागृत करने के साथ गुमनाम शहीदों की गाथाएं जन-जन तक पहुंचाना है।

उन्होंने कहा कि उनका मानना है कि जब हम देशवासी पूरी तरह जान जायेंगे कि हमें स्वाधीनता कितनी कठिनाई से मिली, इसके लिए हमारे स्वतंत्रता सेनानियों को कितना संघर्ष करना पड़ा, कितनी यातनाएं झेलनी पड़ी तो हर देशवासी में राष्ट्रभक्ति की भावना स्वतः ही जागृत हो जायेगी। वे मातृभूमि से प्रेम की अहमियत को समझ पायेंगे। उन्होंने कहा कि आजादी का अमृत महोत्सव हमें यह भी अवसर देता है कि हम अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपने इतिहास को और भी गहराई से जानें। इससे सबको पता लगेगा कि भारत माता ने कैसे-कैसे वीरों को जन्म दिया है। स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए बहुत सारे देशवासी शहीद भी हुए, जिनमें कुछ लोग ऐसे थे जिनकी उम्र बहुत कम थी लेकिन अपने वतन को लेकर इतना प्रेम था और देश प्रेम की भावना इतनी प्रबल थी कि बिना किसी भय के ब्रिटिश हुकूमत को कड़ी चुनौती दी और उनका डटकर सामना अपनी आखिरी सांस तक किया।

Scanned by Scanner Go

राष्ट्रीय सागर, 5 मई 2022

विविध

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से लेनी चाहिए प्रेरणा : राज्यपाल

राष्ट्रीय सागर संवाददाता

रांची : झारखंड के राज्यपाल रमेश बैस ने कहा कि अतीत की घटनाओं से अवगत होकर स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों से सबको प्रेरणा लेना चाहिए। इतिहास में वास्तविकता आनी चाहिए, शोधकर्ता अपने शोध में इस दिशा में ध्यान दें। वे बुधवार को डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी तथा प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि आजादी का अमृत महोत्सव का अर्थ नए विचारों का अमृत है। इसका उद्देश्य देशभर में एक अभियान चलाकर देश की आजादी के लिए स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों द्वारा दिये गये बलिदान एवं उनके योगदान से सबको अवगत कराना है। देशभक्ति की भावना जागृत करने के साथ गुमनाम शहीदों की गाथाएं जन-जन तक पहुंचाना है। उन्होंने कहा कि उनका मानना है कि जब हम देशवासी पूरी तरह जान जायेंगे कि हमें स्वाधीनता कितनी कठिनाई से मिली, इसके लिए हमारे स्वतंत्रता सेनानियों को कितना संघर्ष करना पड़ा, कितनी यातनाएं झेलनी पड़ी तो हर देशवासी में राष्ट्रभक्ति की भावना स्वतः ही जागृत हो जायेगी। वे मातृभूमि से प्रेम की अहमियत को समझ पायेंगे। उन्होंने कहा कि आजादी का अमृत महोत्सव हमें यह भी अवसर देता है कि हम अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपने इतिहास को और भी गहराई से जानें। इससे सबको पता लगेगा कि भारत माता ने कैसे-कैसे वीरों को जन्म दिया है। स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए बहुत सारे देशवासी शहीद भी हुए, जिनमें कुछ लोग ऐसे थे जिनकी उम्र बहुत कम थी लेकिन अपने वतन को लेकर इतना प्रेम था और देश प्रेम की भावना इतनी प्रबल थी कि बिना किसी भय के ब्रिटिश हुकूमत को कड़ी चुनौती दी और उनका डटकर सामना अपनी आखिरी सांस तक किया। इस मौके पर कई लोग मौजूद थे।

Scanned by Scanner Go

सन्मार्ग | 5 मई 2022 | रांची

इतिहास में वास्तविकता आनी चाहिए, शोधकर्ता ध्यान दें : राज्यपाल

अतीत की घटनाओं से अवगत होकर स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों से प्रेरणा लेने का किया आह्वान

संवाददाता

रांची : राज्यपाल रमेश बैस ने कहा कि देश का इतिहास ठीक से नहीं लिखा गया। अंग्रेजों के साथ मिलकर अपने ही कुछ लोगों ने तथ्यों को छिपाया। इस देश का इतिहास, स्वर्णिम रहा है लेकिन कई पीढ़ियों को इस देश के स्वर्णिम इतिहास के बारे में पता ही नहीं चल पाया क्योंकि देश के कुछ चुनिंदा लोगों ने देश को गुमराह किया। इतिहास में वास्तविकता आनी चाहिए। शोधकर्ताओं को अपनी शोध में इन बातों पर ध्यान देना चाहिए। राज्यपाल बुधवार को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र और संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से आजादी का अमृत महोत्सव के तहत आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि अतीत की घटनाओं से अवगत होकर स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों से सबको प्रेरणा लेने की जरूरत है। मालूम हो कि आजादी के 75वें साल को लेकर आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। इसको लेकर देश भर में कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। देश के शिक्षण संस्थानों से लेकर तमाम सरकारी विभाग इसको लेकर आयोजन कर रहे हैं। इसी कड़ी में राजधानी रांची के डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान मुंडारी भाषा की प्राचीनता और प्रासंगिकता विषय पर परिचर्चा का भी आयोजन हुआ। डीएसपीएमयू परिसर में आजादी की रणभेरी प्रदर्शनी भी लगाई गई। प्रदर्शनी में 1757 से 18 57 की क्रांति का वर्णन किया गया है। जिसका लाभ शोधार्थियों व विद्यार्थियों को मिल रहा है। इस कार्यक्रम के दौरान मुंडारी भाषा की उत्पत्ति देश और राज्य में इसकी स्थिति और विभिन्न प्रासंगिकता पर वक्ताओं ने चर्चा की।

छाया : सन्मार्ग

Scanned by Scanner Go